اٰیاتها ١١ ٦٢ سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ ١١٠ رکوعاتها ٢

सूरए जुमुअ़ह मदनिय्या है, इस में ग्यारह आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला [1]

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है[2] बादशाह कमाल पाकी वाला इ़ज़्ज़त वाला

الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ

ह़िक्मत वाला वोही है जिस ने अनपढ़ों में उन्ही में से एक रसूल भेजा[3] कि उन पर उस की आयतें पढ़ते

اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ

हैं[4] और उन्हें पाक करते हैं[5] और उन्हें किताब और ह़िक्मत का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाते हैं[6] और बेशक वोह इस से पहले[7]

لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢﴾ وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

ज़रूर खुली गुमराही में थे[8] और उन में से[9] औरों को[10] पाक करते और इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाते हैं जो उन अगलों से न मिले[11] और वोही इ़ज़्ज़त व

الْحَكِيْمُ ﴿٣﴾ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ

ह़िक्मत वाला है येह **अल्लाह** का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और **अल्लाह** बड़े

मत़लब येह है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाने वालों की हम ने मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्दीक़ करने से मदद फ़रमाई। **1 :** सूरए जुमुअ़ह मदनिय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, ग्यारह 11 आयतें, एक सो अस्सी 180 कलिमे, सात सो बीस 720 ह़र्फ़ हैं। **2 :** तस्बीह़ तीन त़रह़ की है **एक** तस्बीहे ख़िल्क़त कि हर शै की ज़ात और उस की पैदाइश ह़ज़रत ख़ालिक़े क़दीर جَلَّ جَلَالُهٗ की क़ुदरत व ह़िक्मत और उस की वह़दानिय्यत और तन्ज़ीह पर दलालत करती है **दूसरी** तस्बीहे मा'रिफ़त कि **अल्लाह** तआ़ला अपने लुत़्फ़ो करम से मख़्लूक़ में अपनी मा'रिफ़त पैदा करे **तीसरी** तस्बीहे ज़रूरी वोह येह है कि **अल्लाह** तआ़ला हर एक जौहर पर अपनी तस्बीह़ जारी फ़रमाता है, येह तस्बीहे मा'रिफ़त पर मुरत्तब नहीं। **3 :** जिस के नसब व शराफ़त को वोह अच्छी त़रह़ जानते पहचानते हैं उन का नामे पाक मुह़म्मद मुस्त़फ़ा है صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हुज़ूर सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सिफ़त नबिय्ये उम्मी है इस की बहुत वुजूह हैं **: एक :** उन में से येह है कि आप उम्मते उम्मिय्यह की त़रफ़ मब्ऊ़स हुए। किताब शिआ़या में है **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है मैं उम्मियों में एक उम्मी भेजूंगा और उस पर नुबुव्वत ख़त्म कर दूंगा और **एक** वज्ह येह है कि आप की बि'सत उम्मुल क़ुरा या'नी मक्कए मुकर्रमा में हुई और **एक** वज्ह येह भी है कि हुज़ूरे अन्वर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام लिखते और किताब से कुछ पढ़ते न थे और येह आप की फ़ज़ीलत थी कि ग़ायते हुज़ूरे इ़ल्म से इस की ह़ाजत न थी, ख़त़ एक सन्अ़ते ज़ेहनिय्या है जो आलए जिस्मानिय्या से सादिर होती है तो जो ज़ात ऐसी हो कि क़लमे आ'ला उस के ज़ेरे फ़रमान हो उस को इस किताबत की क्या ह़ाजत, फिर हुज़ूर का किताबत न फ़रमाना और किताबत का माहिर होना एक मो'जिज़ए अ़ज़ीमा है, कातिबों को इ़ल्मे ख़त़ और रस्मे किताबत की ता'लीम फ़रमाते और अहले ह़िर्फ़त (अहले फ़न) को ह़िर्फ़तों (फ़ुनून) की ता'लीम देते और हर कमाले दुन्यवी व उख़्वी में **अल्लाह** तआ़ला ने आप को तमाम ख़ल्क़ से आ'लम किया। **4 :** या'नी क़ुरआने पाक सुनाते हैं **5 :** अ़क़ाइदे बात़िला व अख़्लाक़े रज़ीला व ख़बाइसे जाहिलिय्यत व क़बाइहे आ'माल से **6 :** किताब से मुराद क़ुरआन और ह़िक्मत से सुन्नत व फ़िक़्ह़ है या अह़कामे शरीअ़त और असरारे त़रीक़त। **7 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से क़ब्ल **8 :** कि शिर्क व अ़क़ाइदे बात़िला व ख़बाइसे आ'माल में गिरिफ़्तार थे उन्हें मुर्शिदे कामिल की शदीद ह़ाजत थी। **9 :** या'नी उम्मियों में से **10 :** औरों से मुराद या तो अ़जम हैं या वोह तमाम लोग जो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के बा'द क़ियामत तक इस्लाम में दाख़िल हों उन

www.dawateislami.net

الْعَظِيْمِ ④ مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ

फ़ज़्ल वाला है[12] उन की मिसाल जिन पर तौरैत रखी गई थी[13] फिर उन्हों ने उस की हुक्म बरदारी न की[14] गधे की

الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ؕ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ

मिसाल है जो पीठ पर किताबें उठाए[15] क्या ही बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्हों ने **अल्लाह** की आयतें

اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ⑤ قُلْ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْۤا

झुटलाई और **अल्लाह** ज़ालिमों को राह नहीं देता तुम फ़रमाओ ऐ यहूदियो !

اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ

अगर तुम्हें येह गुमान है कि तुम **अल्लाह** के दोस्त हो और लोग नहीं[16] तो मरने की आरज़ू करो[17] अगर

كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ⑥ وَ لَا يَتَمَنَّوْنَهٗۤ اَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَ اللّٰهُ

तुम सच्चे हो[18] और वोह कभी इस की आरज़ू न करेंगे उन कौतकों (आ'माल) के सबब जो उन के हाथ आगे भेज चुके हैं[19] और **अल्लाह**

عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ⑦ قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ

ज़ालिमों को जानता है तुम फ़रमाओ वोह मौत जिस से तुम भागते हो वोह तो ज़रूर

مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ

तुम्हें मिलनी है[20] फिर उस की त़रफ़ फेरे जाओगे जो छुपा और ज़ाहिर सब कुछ जानता है फिर वोह तुम्हें बता देगा जो कुछ

تَعْمَلُوْنَ ع ⑧ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ ع

तुम ने किया था ऐ ईमान वालो जब नमाज़ की अज़ान हो

الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَ ذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

जुमुआ़ के दिन[21] तो **अल्लाह** के ज़िक्र की त़रफ़ दौड़ो[22] और ख़रीदो फ़रोख़्त छोड़ दो[23] येह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम

को **11 :** उन का ज़माना न पाया उन के बा'द आए या फ़ज़्लो शरफ़ में उन के दरजे को न पहुंचे क्यूं कि सह़ाबा के बा'द के लोग ख़्वाह ग़ौसो क़ुतुब हो जाएं मगर फ़ज़ीलते सह़ाबिय्यत नहीं पा सकते। **12 :** अपने ख़ल्क़ पर, उस ने उन की हिदायत के लिये अपने ह़बीब मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को मब्ऊ़स फ़रमाया। **13 :** और उस के अह़काम का इत्तिबाअ़ उन पर लाज़िम किया गया था वोह लोग यहूद हैं। **14 :** और उस पर अ़मल न किया और उस में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त देखने के बा वुजूद हुज़ूर पर ईमान न लाए। **15 :** और बोझ के सिवा उन से कुछ भी नफ़्अ़ न पाए और जो उ़लूम उन में हैं उन से अस्लन वाक़िफ़ न हो, येही ह़ाल उन यहूद का है जो तौरैत उठाए फिरते हैं इस के अल्फ़ाज़ रटते हैं और इस से नफ़्अ़ नहीं उठाते इस के मुत़ाबिक़ अ़मल नहीं करते और येही मिसाल उन लोगों पर सादिक़ आती है जो क़ुरआने करीम के मआ़नी को न समझें और इस पर अ़मल न करें और इस से ए'राज़ करें। **16 :** जैसा कि तुम कहते हो कि हम **अल्लाह** के बेटे और उस के प्यारे हैं **17 :** कि मौत तुम्हें उस तक पहुंचाए **18 :** अपने इस दा'वे में **19 :** या'नी उस कुफ़्र व तक्ज़ीब के बाइ़स जो उन से सादिर हुई है। **20 :** किसी त़रह़ उस से बच नहीं सकते। **21 :** रोज़े जुमुआ़, इस दिन का नाम

تَعْلَمُوْنَ ۝٩ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِی الْاَرْضِ وَ ابْتَغُوْا

जानो फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और **अल्लाह** का

مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَ اذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِیْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝١٠ وَ اِذَا رَاَوْا

फ़ज़्ल तलाश करो[24] और **अल्लाह** को बहुत याद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह् पाओ और जब उन्हों ने

تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا انْفَضُّوْۤا اِلَیْهَا وَ تَرَكُوْكَ قَآىٕمًا ؕ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ

कोई तिजारत या खेल देखा उस की त़रफ़ चल दिये[25] और तुम्हें ख़ुत़्बे में खड़ा छोड़ गए[26] तुम फ़रमाओ वोह जो **अल्लाह** के पास है[27]

ع
خَیْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَ مِنَ التِّجَارَةِ ؕ وَ اللّٰهُ خَیْرُ الرّٰزِقِیْنَ ۝١١

खेल से और तिजारत से बेहतर है और **अल्लाह** का रिज़्क़ सब से अच्छा

ایاتها ١١ | ٦٣ سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ مَدَنِيَّة ١٠٤ | رکوعاتها ٢

सूरए मुनाफ़िक़ून मदनिय्या है, इस में ग्यारह आयतें और दो रुकूअ़ हैं

अ़रबी ज़बान में **अ़रूबा** था, जुमुआ़ इस को इस लिये कहा जाता है कि नमाज़ के लिये जमाअ़तों का इज्तिमाअ़ होता है वज्हे तस्मिया में और भी अक़्वाल हैं, सब से पहले जिस शख़्स ने इस दिन का नाम जुमुआ़ रखा वोह का'ब बिन लुई हैं, पहला जुमुआ़ जो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब के साथ पढ़ा अस्ह़ाबे सियर का बयान है कि हु़ज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام जब हिजरत कर के मदीनए त़य्यिबा तशरीफ़ लाए तो बारहवीं रबीउ़ल अव्वल रोज़े दो शम्बा (पीर) को चाश्त के वक़्त मक़ामे क़ुबा में इक़ामत फ़रमाई दो शम्बा, सेह शम्बा (मंगल), चहार शम्बा (बुध), पंज शम्बा (जुमे'रात) यहां क़ियाम फ़रमाया और मस्जिद की बुन्याद रखी, रोज़े जुमुआ़ मदीनए त़य्यिबा का अ़ज़्म फ़रमाया, बनी सालिम इब्ने औ़फ़ के बत़्ने वादी में जुमुआ़ का वक़्त आया, उस जगह को लोगों ने मस्जिद बनाया, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने वहां जुमुआ़ पढ़ाया और ख़ुत़्बा फ़रमाया। जुमुआ़ का दिन सय्यिदुल अय्याम है जो मोमिन इस रोज़ मरे ह़दीस शरीफ़ में है कि **अल्लाह** तआ़ला उस को शहीद का सवाब अ़त़ा फ़रमाता है और फ़ित्नए क़ब्र से मह़फ़ूज़ रखता है। अज़ान से मुराद अज़ाने अव्वल है न अज़ाने सानी जो ख़ुत़्बे से मुत्तसिल होती है, अगर्चे अज़ाने अव्वल ज़मानए ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه में इज़ाफ़ा की गई मगर वुजूबे सअ़्य और तर्के बैअ़ व शिराअ इसी से मुतअ़ल्लिक़ है। (كذا فی الدر المختار) **22 :** दौड़ने से भागना मुराद नहीं है बल्कि मक़्सूद येह है कि नमाज़ के लिये तय्यारी शुरूअ़ करो और "ज़िक्रुल्लाह" से जुम्हूर के नज़्दीक ख़ुत़्बा मुराद है। **23 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जुमुआ़ की अज़ान होते ही ख़रीदो फ़रोख़्त ह़राम हो जाती है और दुन्या के तमाम मशाग़िल जो ज़िक्रे इलाही से ग़फ़्लत का सबब हों इस में दाख़िल हैं, अज़ान होने के बा'द सब को तर्क करना लाज़िम है। **मस्अला :** इस आयत से नमाज़े जुमुआ़ की फ़र्ज़िय्यत और बैअ़ वग़ैरा मशाग़िले दुन्यविय्या की ह़ुरमत और सई या'नी एहतिमामे नमाज़ का वुजूब साबित हुवा और ख़ुत़्बा भी साबित हुवा। **मस्अला :** जुमुआ़ मुसल्मान मर्द, मुकल्लफ़, आज़ाद व तन्दुरुस्त, मुक़ीम पर शह्र में वाजिब होता है, नाबीना और लंगड़े पर वाजिब नहीं होता, सिह़्ह़ते जुमुआ़ के लिये सात शर्तें हैं (1) शह्र, जहां फ़ैसलए मुक़द्दमात का इख़्तियार रखने वाला कोई ह़ाकिम मौजूद हो या फ़िनाए शह्र जो शह्र से मुत्तसिल हो और अहले शह्र उस को अपने ह़वाइज के काम में लाते हों। (2) ह़ाकिम (3) वक़्ते ज़ोहर (4) ख़ुत़्बा वक़्त के अन्दर (5) ख़ुत़्बे का क़ब्ले नमाज़ होना इतनी जमाअ़त में जो जुमुआ़ के लिये ज़रूरी है (6) जमाअ़त और इस की अक़ल मिक़्दार तीन मर्द हैं सिवाए इमाम के (7) इज़्ने आ़म कि नमाज़ियों को मक़ामे नमाज़ में आने से रोका न जाए। **24 :** या'नी अब तुम्हारे लिये जाइज़ है कि मआ़श के कामों में मश्ग़ूल हो या त़लबे इल्म या इयादते मरीज़ या शिर्कते जनाज़ा या ज़ियारते उ़लमा और इस के मिस्ल कामों में मश्ग़ूल हो कर नेकियां ह़ासिल करो। **25 शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم मदीनए त़य्यिबा में रोज़े जुमुआ़ ख़ुत़्बा फ़रमा रहे थे इस ह़ाल में ताजिरों का एक क़ाफ़िला आया और ह़स्बे दस्तूर ए'लान के लिये त़ब्ल बजाया गया, ज़माना बहुत तंगी और गिरानी (महंगाई) का था, लोग ब ई ख़याल उस की त़रफ़ चले गए कि ऐसा न हो कि देर करने से अज्नास ख़त्म हो जाएं और हम न पा सकें और मस्जिद शरीफ़ में सिर्फ़ बारह आदमी रह गए, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **26 मस्अला :** इस से साबित हुवा कि ख़त़ीब को खड़े हो कर ख़ुत़्बा पढ़ना चाहिये। **27 :** या'नी नमाज़ का अज्रो सवाब और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर रहने की बरकत व सआ़दत।